• कविताएं...

अन्नू का तोता

'बाबा, बाबा' बोला पोता,
'लाल, दुलारे तू क्यों रोता?'
'ला दो पिंजला, ला दो तोता
बला नहीं, बछ छोता-छोता।'
अन्नू जी ने गाना छोड़ा,
अन्नू जी ने खाना छोड़ा,
बाबा साहब से की कुट्टी
दादा से भी हो गई छुट्टी।
अन्नू जी का तोता आया
पिंजड़े में उसको बैठाया,
तनिक न तोते के मन भाया
पानी पिया, न दाना खाया!
'सीता-राम' न पट्ठू बोले
बंद न अपनी आंखें खोले,
चुमकारें या उसे चहेंटे-
चीख-चीखकर बोले 'टें-टें।'
अन्नू ने छोड़ी शैतानी
उसको हुई बड़ी हैरानी,
पानी पिए न दाना खाए
'राम' न बोले, बस चिल्लाए!
'कौन, कहां, तोते के पापा?
दद्दा होंगे इसके बाबा।'
'लाल दुलारे, वे हैं वन में,
इसीलिए दुख इसके मन में।'
अब न करूंगा मैं मनमानी
अन्नू की आंखों में पानी,
पिंजड़ा खोला, बोले, 'आ-आ,
बहुत सताया तुझको जा-जा।'

■ संत कुमार टंडन 'रसिक'

• चुटकुला...

शिक्षक : पप्पू, बताओ बिजली कहाँ से आती है?
पप्पू : सर, हमारे मामा के घर से!
शिक्षक : वो कैसे?
पप्पू : जब भी बिजली जाती है, पापा कहते हैं- 'लो, फिर काट दी सालों ने!'

शिक्षक- बताओ, अकबर के बाद कौन आया?
छात्र : सर, अकबर के बाद 'ब' आया, 'र' आया और फिर पूर्णविराम आया!

शिक्षक : "I am going" का हिंदी अनुवाद करो।
छात्र : मैं जा रहा हूं।
शिक्षक- बहुत अच्छे! अब बताओ "He is going" का क्या होगा?
छात्र : जब आप जा रहे हैं, तो वो भी आपके साथ ही जा रहा होगा सर!

• जानकारी...

बादल बनने की प्रक्रिया

बारिश ने अपना आगमन देना शुरू कर दिया है. देश के जगह-जगह पर जोरदार बारिश हो रही है. ऐसे में क्या आपने कभी जानने की कोशिश की कि बारिश के मौसम में बादलों के पास इतना पानी आता कहां से है? ऐसे में आपको बता दें कि बारिश की पूरी कहानी सूरज से शुरू होती है. यानी सूरज की गर्मी से

समंदर, नदी, तालाब और झील का पानी गर्म होता है। तभी शुरू होती है बादल बनने की प्रक्रिया। गर्म होने पर पानी हल्की भाप बनकर हवा में ऊपर उठने लगता है। सिर्फ पानी ही नहीं, पेड़-पौधे भी अपनी पत्तियों से पानी की भाप छोड़ते हैं। यानी बादलों को पानी सिर्फ समंदर से ही नहीं, बल्कि धरती के हर उस हिस्से से मिलता है जहां पानी मौजूद होता है। एक रिपोर्ट के अनुसार, बादल करीब 86 प्रतिशत पानी केवल समंदर से लेते हैं, क्योंकि धरती का ज्यादातर हिस्सा पानी से ढका है। यह भाप हल्की होती है, इसलिए हवा में ऊपर की तरफ उठती चली जाती है और साथ ही इसको इंसानी आंखों से देखा भी नहीं जा सकता है।

▸▸ हवा में पानी से बनते हैं बादल

अगर बात करें कि आखिर इस भाप से पानी कैसे बनता है तो बता दें कि जैसे-जैसे यह भाप ऊपर जाती है, वहां की हवा ठंडी होती जाती है। ऊंचाई पर पहुंचकर भाप ठंडी हवा के संपर्क में आती है और छोटी-छोटी पानी की बूंदों या बर्फ के कणों में बदल जाती है। ये बूंदें इतनी छोटी और हल्की होती हैं कि हवा में तैरती रहती हैं। साथ ही ये बूंदें केवल भाप से ही नहीं बनती हैं, बल्कि ये हवा में मौजूद धूल, नमक और प्रदूषण के छोटे कणों के चारों तरफ चिपककर बनती हैं। वहीं, जब लाखों-करोड़ों ऐसी छोटी बूंदें एक साथ जमा हो जाती हैं, तो वे मिलकर बादल का रूप ले लेती हैं। शुरुआत में ये बूंदें इतनी हल्की होती हैं कि हवा का दबाव इन्हें नीचे गिरने नहीं देता और बादल आसमान में तैरते रहते हैं।।

▸▸ बूंदें भारी होकर बरसती हैं बारिश बनकर

इस जानकारी के बाद अगर बरसात की बात करें तो बादल के अंदर ये छोटे-छोटे बूंद आपस में टकराते रहते हैं और मिलकर बड़ी-बड़ी पानी की बूंद बन जाते हैं। फिर जितनी बड़ी बूंद बनती जाती है, उतने ज्यादा वे बड़े और भारी बनते जाते हैं कि हवा उन्हें ऊपर टिकाकर नहीं रोक पाती है और वे नीचे गिर जाते हैं। यही गिरती हुई बूंद को हम लोग बारिश कहते हैं। जमीन पर गिरने के बाद यह पानी फिर से नदी, तालाब और समंदर में पहुंच जाता है और सूरज की गर्मी से दोबारा भाप बनकर ऊपर उठता है। इस पूरे चक्र को 'जल चक्र' कहा जाता है, जो लाखों सालों से लगातार चलता आ रहा है और धरती पर पानी को हमेशा घुमाता रहता है।

• ब्रिटिश कहानी

जादूगर मलकान

रुडी एक छोटे से गाँव में रहता था। फिर भी उसका नाम दूर-दूर तक मशहूर था। कारण, रुडी बहुत अच्छे खिलौने बनाता था। उसके बनाए कई खिलौने राजमहल की शोभा बढ़ाते थे। राजा ने उसे अनेक बार पुरस्कार दिए थे। एक बार नगर में खिलौनों की प्रतियोगिता हुई। रुडी राजा के लिए 'गाने वाली पिटारी' बनाकर ले गया। राजा को वह खिलौना बहुत पसंद आया। सब सोच रहे थे, पहला पुरस्कार रुडी को ही मिलेगा। राजा पुरस्कार की घोषणा करने खड़े हुए। तभी एक व्यक्ति दरबार में आया। उसके साथ एक लड़की थी। वह अत्यंत सुंदर थी और राजसी पोशाक पहने हुए थी।

उस व्यक्ति ने राजा से कहा, ''महाराज, मेरा नाम मलकान है। मैं खिलौने बनाया करता हूँ। मैं चाहता हूँ, आप मेरा बनाया खिलौना देख लें। उसके बाद पुरस्कार का निर्णय करें।''

राजा ने कहा, ''ठीक है, दिखाओ अपना खिलौना।''

मलकान ने हँसकर उस लड़की की ओर संकेत किया। बोला, ''महाराज, मैंने ही इस बोलने वाली गुड़िया को बनाया है।''

''बोलने वाली गुड़िया!'' राजा ने आश्चर्य से कहा। दरबार में सभी चकित रह गए।

मलकान ने कहा, ''महाराज, मैं जादू जानता हूँ। उसी जादू से मैंने यह बोलने वाली गुड़िया बनाई है।''

कई दरबारियों ने गुड़िया को छूकर देखा। वह हाड़-मांस की जीवित लड़की दिखाई दे रही थी। अद्भुत बात थी। कोई इस बात पर विश्वास नहीं कर पा रहा था कि वह लड़की वास्तव में गुड़िया है।

''महाराज, मैं अपने जादू से और भी बढ़िया खिलौने तैयार कर सकता हूँ।'' मलकान बोला।

राजा कुछ पल सोचते रहे। फिर बोले, ''मलकान, यह खिलौना बनाने की प्रतियोगिता है, जादू की नहीं। तुम अपने हाथ से बना कोई खिलौना दिखाओ, तो हम विचार करेंगे।''

मलकान ने मुँह बिचका दिया। बोला, ''जादू से मैं मनचाहा काम कर सकता हूँ, फिर मुझे बेकार के खिलौने बनाने की क्या आवश्यकता है?''

यह कहकर वह गुड़िया को ले, दरबार से चला गया। जहाँ-जहाँ जादुई गुड़िया ने पैर रखे थे, वहाँ काले-काले निशान पड़ गए और धुआँ उठने लगा।

राजा ने रुडी के खिलौने को प्रथम पुरस्कार दिया। प्रतियोगिता समाप्त हुई। लेकिन सबके मन में एक शंका थी-मलकान कोई-न-कोई शरारत जरूर करेगा।

हुआ भी ऐसा ही। मलकान ने रुडी को सबक सिखाने का फैसला कर लिया था। इस घटना के बाद उसने रुडी के गाँव के पास काफी जमीन खरीद ली। वहाँ एक ऊँची पहाड़ी थी। पहाड़ी के अंदर एक गुप्त जादुई महल बनाया। उसी महल में रहकर उसने अपने जादू से लकड़ी के खिलौना-सैनिक बनाए और पहाड़ी पर जगह-जगह तैनात कर दिए।

रुडी को इस बारे में कुछ पता नहीं था। वह गाँव वालों के साथ पहाड़ी पर लकड़ी काटने जाता था। उस लकड़ी से बहुत अच्छे खिलौने बनते थे।

एक दिन गाँव वाले लकड़ी काटने गए तो पहाड़ी के अंदर तरह-तरह की आवाजें सुनाई दीं। पत्थर लुढ़कने लगे। वहाँ बहती नदी का पानी खौलने लगा। जमीन में दरारें पड़ गईं।

सब लोग डरकर भाग आए। सोचने लगे, 'न जाने पहाड़ी के अंदर क्या हो रहा है?'

उसी शाम एक अजनबी गाँव में आया। वह मलकान को जानता था। उसे यह भी पता था कि मलकान की योजना क्या है। उसने रुडी को बताया, ''मलकान ने तुमसे बदला लेने की योजना बनाई है। वह पहाड़ी को जादू के जोर से तुम्हारे गाँव से परे खिसका रहा है। वह चाहता है, तुम्हें खिलौनों के लिए बढ़िया लकड़ी न मिल सके। सावधान हो जाओ।''

-जारी

राजा पुरस्कार की घोषणा करने खड़े हुए। तभी एक व्यक्ति दरबार में आया। उसके साथ एक लड़की थी। वह अत्यंत सुंदर थी और राजसी पोशाक पहने हुए थी। उस व्यक्ति ने राजा से कहा, ''महाराज, मेरा नाम मलकान है। मैं खिलौने बनाया करता हूँ। मैं चाहता हूँ, आप मेरा बनाया खिलौना देख लें। उसके बाद पुरस्कार का निर्णय करें।'' राजा ने कहा, ''ठीक है, दिखाओ अपना खिलौना।'' मलकान ने हँसकर उस लड़की की ओर संकेत किया...

• रोचक...

सबमरीन

समंदर की गहराइयों में पनडुब्बी महीनों तक गुप्त रूप से दुश्मन की तलाश करती हैं, तो इंसानी समझ दंग रह जाती है, लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि इसे दुनिया में सबसे पहले किसने बनाया और यह कितने गहरे पानी में चलती थी और इसका संचालन कैसे होता था। दुनिया की पहली सबमरीन बनाने का श्रेय नीदरलैंड के प्रसिद्ध आविष्कारक कॉर्नेलिस ड्रेबेल को दिया जाता है। उन्होंने इसे 1620 में इंग्लैड की धरती पर बनाया था। बिना किसी आधुनिक मशीनों के और बिना किसी सीमित संसाधनों के साथ तैयार पनडुब्बी का परीक्षण लंदन की मशहूर थेम्स नदी में किया गया था। दुनिया की पहली सबमरीन बनाने का श्रेय नीदरलैंड के प्रसिद्ध आविष्कारक कॉर्नेलिस ड्रेबेल को दिया जाता है। उन्होंने इसे 1620 में इंग्लैड की धरती पर बनाया था। बिना किसी आधुनिक मशीनों के और बिना किसी सीमित संसाधनों के साथ तैयार पनडुब्बी का परीक्षण लंदन की मशहूर थेम्स नदी में किया गया था।

• चांद

चांद अरबों सालों से पृथ्वी का सबसे करीबी खगोलीय साथी रहा है, लेकिन हर साल यह धीरे-धीरे पृथ्वी से दूर होता जा रहा है। वैज्ञानिकों का ऐसा कहना है कि चांद हर साल पृथ्वी से लगभग 3.8 सेंटीमीटर दूर जा रहा है। इससे वक्त के साथ इसकी कक्षा धीरे-धीरे बड़ी होती जा रही है। चांद का गुरुत्वाकर्षण समुद्र में ज्वार भाटा पैदा करता है, क्योंकि पृथ्वी, चांद के कक्षा की तुलना में तेजी से घूमती है, इस वजह से ज्वारीय बल पृथ्वी से चांद तक ऊर्जा पहुंचाते हैं। इससे चंद एक ऊंची कक्षा में चला जाता है। वैज्ञानिकों का ऐसा कहना है कि चांद हर साल पृथ्वी से लगभग 3.8 सेंटीमीटर दूर जा रहा है।